दिनांक
14/07/25

classmate
Date
Page

प्रश्न अभ्यास (उत्साह)

1) छायावाद की एक खास विशेषता है अंतर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। → धारणा पुष्ट होती है। कवि फागुन की मादकता को देखकर उत्साहित है। उसका अंतरमन उमंगित है तो वह अपने इस उत्साह और उमंग को प्रकृति के उपादानों के सहारे प्रकट करता है। कवि के मन के भावों को इन पंक्तियों में देखा जा सकता है - 'आभा फागुन की तन सठ नहीं रही है'। प्रकृति के सारे जीवों की उन मादकता और उल्लास को देखकर कवि भाव विह्वल हो उठते हैं। प्रकृति के सारे जीवों की उत्तेजना

जब कवि का मन प्राकृतिक भिन्न-भिन्न सौंदर्य को देखकर प्रफुल्लित हो उठता है, उस समय कवि का अंतरमन कह उठता है - कहीं हरी, कहीं लाल, कहीं पड़ी है उर में मंद-गंध-पुष्प-माल।

अट नहीं रही है

1) 'अट नहीं रही है' कविता में कवि फागुन की मादकता प्रकृति की व्यापकता और सौंदर्यता का वर्णन करते हुए कवि कहना चाहता है कि हर जगह सुंदरता बिखरी हुई है। रंग बी रंगे फूल पत्ते इस तरह छा गए हैं मानो वे फागुन के तन में समा नहीं पा रहे हैं। वे तन से छलक-छलककर बाहर गिर रहे हैं। प्रकृति में फागुन के आते ही वातावरण में न तो प्रचंड गर्मी उठती रहती है और नहीं जाड़े की कड़कपन का वातावरण इतना सुहावना होता है की सारे जीव और पक्षी गण उत्तेजित होकर उल्लास से जीते हैं, सबके हो उठे हैं और मदकता प्रकट करते हैं। कवि प्रकृति को इन

ऐसी सभी गतिविधियों को देखकर मंत्र मुग्ध हो जाता है और उनकी आँखे इन सुंदरताओं को हट नहीं पाता।

प्रस्तुत कविता मे कवि
कवि प्रकृति की व्यापकता का वर्णन अनेक प्रकार से किया है-
फागुन के महीने मे वह

2) फागुन के महीने मे सभी के घरो मे रंग की रंगो सुंदर फूल खील जाने से सभी मे खुशियाँ छा जाती है इसलिए कवि ने पर-पर करदेते हो, तुम' प्रकट किया है।
3) वातावरण की मादकता और मधुरता को व्यक्त करने के लिए उड़ने को नभ मे तुम, पर-पर कर देते हो, कहा है।
4) प्रकृति मे हरियाली और सौंदर्यता को देख